क्या पुलिस को बल्लभगढ़-फरीदाबाद में दंगा होने का इंतजार है, गुंडा तत्व पकड़ से बाहर

फरीदाबाद (ममो) निकिता को न्याय दिलाने के नाम पर बल्लभगढ़ स्थित अपना घर सोसाइटी पर विभिन्न हिंदुत्ववादी दलों ने पिछले कई दिनों से बवाल काटा हुआ है। इसी क्रम में बल्लभगढ़ दशहरा ग्राउंड में एक महापंचायत का आयोजन विभिन्न हिंदुत्ववादी संगठनों ने किया। पंचायत ने धीरे-धीरे दंगे का रूप ले ही लिया था कि पुलिस प्रशासन ने आनन-फानन में लाठीचार्ज करके स्थिति को फिलहाल संभाल लिया, पर इस हंगामे की कवायद कई दिनों से लिखी जा रही थी।

सोशल मीडिया के चैनल 'हरियाणा अब तक' पर एक विडियो बहुत तेजी से वायरल हो रहा है जिसमे एक व्यक्ति किसी चैनल को अपनी बाइट्स में मुस्लिम समुदाय को सूअर और अन्य अपशब्दों के साथ संबोधित कर रहा है। यह व्यक्ति दावा भी कर रहा है कि या तो प्रशासन अपना घर सोसाइटी में रहने वाले मुसलमानों को खत्म कर दे वरना हम जबरन उन्हें यहाँ से निकाल देंगे। इतना ही नहीं यह व्यक्ति दावा कर रहा है कि सोसाइटी के प्रधान को जब उसने बुला कर मुस्लिम लोगों को इस कॉलोनी से निकलने की बात कही तो प्रधान ने उन्हें भरोसा दिलाया कि सोसाइटी में 25 घर मुस्लिमों के हैं और उन्हें वो10 दिन में निकाल देगा। ऐसा न होने की स्थिति में तिलकधारी युवक प्रशासन को ही चुनौती दे रहा है।

पुलिस प्रशासन की असफलता का आलम यह है कि जब इस विडियो के बारे में थाना मुजेसर के एसएचओ से पूछा गया तो उन्होंने बताया कि उन्हें आजतक इसकी कोई जानकारी ही नहीं है। जबकि यह विडियो महापंचायत होने के पहले से ही सोशल मीडिया में घूम रही है। इसी का

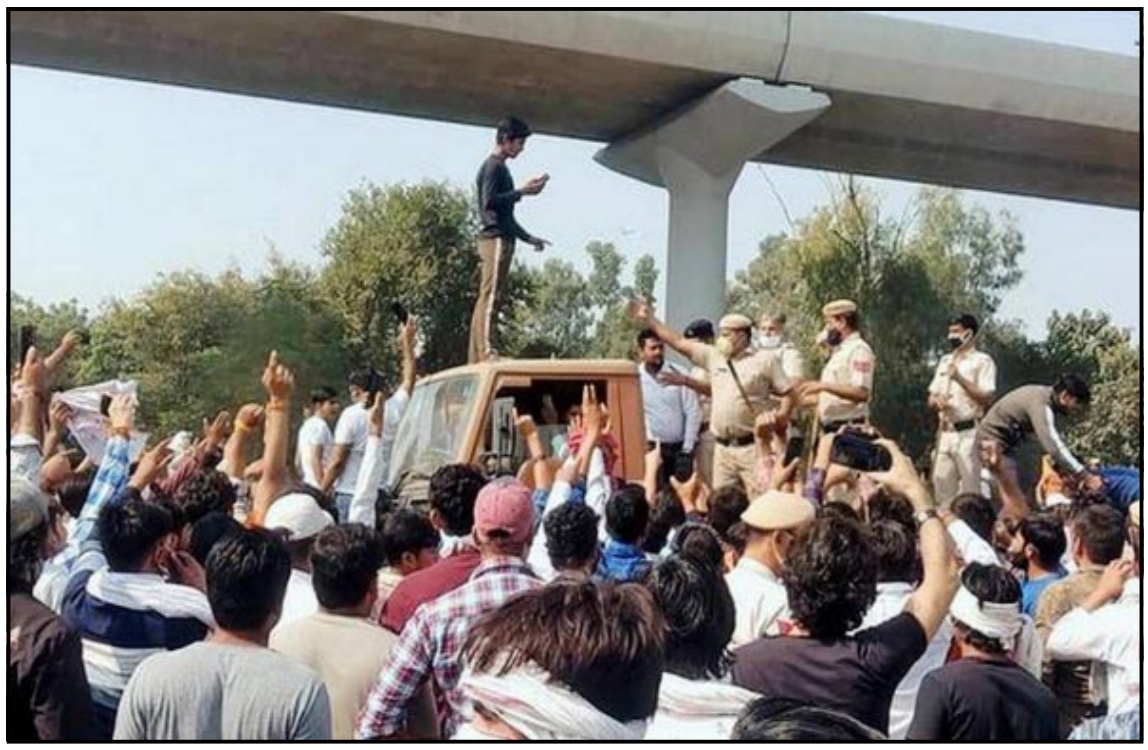

नतीजा है कि प्रशासन की अनुमति के बिना होने वाली इस अवैध महापंचायत के बाद अचानक कुछ दंगाई सडकों पर मुस्लिम दुकानदारों की दुकानों को निशाना बनाने लगे। अब पुलिस ने खुद यह माना है कि यह उपद्रव पहले से प्लान था और इसके लिए कई व्हाट्सएप्प ग्रुपों का इस्तेमाल किया गया है। बताते चलें कि ऐसे ही व्हाट्सएप्प ग्रुपों का इस्तेमाल उत्तरी दिल्ली दंगों के दंगाइयों ने अफवाहें और नफरत फैलाने के लिए किया था जबकि पुलिस मूक दर्शक बनी रही। नतीजा एक वीभत्स दंगे के रूप में सामने आया।

निकिता को न्याय दिलाने के नाम पर दंगे कराने की कोशिश करने वाले तरह-तरह के हिंदुत्व, जातिवादी संगठनों के इस व्यवहार की आलोचना खुद निकिता के पिता मूलचंद तोमर ने भी की। उन्होंने इलाके के कांग्रेस विधायक नीरज शर्मा के साथ किये गए अभद्र व्यवहार को भी गलत बताते हुए इस मामले पर गन्दी राजनीति न करने का आग्रह किया। पूरे मामले में पुलिस ने पांच घंटों में ही आरोपी तौसीफ और उसके दोस्त को पकड़ कर जेल भेज दिया। पर दंगे करवाने को लालायित ये छद्म न्यायप्रिय जातिवादी संगठन किसी भी तरह से मुद्दे को हिन्दू-मुसलमान करने का भरसक प्रयास कर रहे हैं।

इलाके के आरडब्लूए के प्रधान हवा सिंह से वीडियो में उनका नाम आने और मुस्लिमों का घर खाली कराने के आरोप को खारिज करते हुए इस बात का खंडन किया कि ऐसी कोई भी बात उन्होंने किसी से नहीं कही और विडियो में वह व्यक्ति झूठ बोल रहा है। आरडब्लयूए के एक अन्य सदस्य से जब यह पूछा गया कि यदि तौसीफ ने अपराध किया है तो उसमे अपनाघर सोसाइटी में रहने वाले मुस्लिम समुदाय के लोगों का क्या दोष तो इसपर उन्होंने साफ-साफ न कहकर घुमा फिरा कर जवाब दिया कि यदि मुस्लिम इलाके में हिन्दू लड़के ने ऐसा अपराध किया होता तो वे लोग भी हिन्दुओं के प्रति ऐसी ही भावना रखते। सोसाइटी के अधिकतर लोगों का मानना था कि बाहरी लोगों ने आकर इस मामले को धार्मिक रंग दिया है। इलाके के लोगों की सहानुभूति लड़की के परिवार के साथ है पर इसमें सभी मुस्लिमों को दोषी ठहराना शुद्ध राजनीति है जिसे सोसाइटी के ज्यादातर लोग समझते हैं।

बता दें कि तौसीफ नामक युवक ने 26 अक्टूबर को निकिता को बल्लभगढ़ स्थित कालेज के बाहर गाडी में जबरन बैठाने का प्रयास किया और असफल होने पर उसे गोली मार दी। पुलिस ने कार्यवाही करते हुए उसी दिन तौसीफ को नूंह से गिरफ्तार कर लिया। घटना में पुलिस के द्वारा तुरंत कार्यवाही करने के बावजूद हिंसा फैलाने के लिए कुछ संगठन लगातार मामले को हिन्दू बनाम मुस्लिम का रंग देने का प्रयास कर रहे हैं। फरीदाबाद पुलिस के द्वारा ऐसे हिसात्मक और नफरती बयान देने वालो को खुलेआम ऐसा करने देना शहर की शांति व्यवस्था के लिए बहुत बड़ा खतरा है।

खबर मरम्मत

जुम्मन मियां पंक्चर वाले

बना दी 11 हजार पेज की चार्जशीट अब फ़ोटोकॉपी करवाने के पैसे नहीं

दिल्ली दंगों के मामले में पकड़े गये आसिफ इकबाल तनहा व जेएनयू की छात्रा कलिता व नताशा आदि के खिलाफ़ दिल्ली पुलिस ने पिछले दिनों अदालत में चार्जशीट दाखिल कर दी थी। चार्जशीट लगभग 11000 पेज की थी। इसकी कॉपी आरोपियों को नहीं दी गयी थी। आरोपियों की मांग पर अदालत ने आदेश दिया कि सभी आरोपियों को पूरी चार्जशीट की एक-एक प्रति दी जाये। ये उनका कानूनी अधिकार है।

बड़ा अपराध दिखाने के चक्कर में जरूरी गैर जरूरी सब तरह के कागज इकट्ठे कर के भारी भरकम चार्जशीट दाखिल करने वाली दिल्ली पुलिस के लिये अब मुसीबत खड़ी हो गयी है कि सभी अभियुक्तों को चार्जशीट की कॉपी देने में जो लाखों रुपये फ़ोटोकॉपी करवाने के लिये चाहिये वो कहां से जुटायें। ज़्यादा शानपत भी कभी-कभी मुसीबत बन जाती है। दिल्ली पुलिस ने फोटोकॉपी के लिये लाखों रुपये का स्पेशल फंड उपर से पास करवाने के लिये अब अदालत से 15 दिन का समय मांगा है।

अमरीकियों ने संघ को दुत्कारा

तीव्र होते वैचारिक मतभेदों के बीच सम्पन्न हुये अमेरिकी चुनाव में मतदाताओं ने न सिर्फ मोदी के बड़े भाई ट्रम्प को धता बतायी बल्कि आरएसएस को भी एक फासिस्ट संगठन मानते हुये दुत्कार दिया। अमेरिकी में भारतीय मूल के पांच नागरिक डेमोक्रेटिक पार्टी से चुनाव में खड़े थे जिनमें से चार ने तो दूसरी बार विजय प्राप्त की जबकि आरएसएस से जुड़े उम्मीदवार पूर्व राजनयिक श्रीनिवास प्रेस्टन कुलकर्णी को उनके आरएसएस से सम्बन्धों के कारण लोगों ने धूल चटा दी। टेक्सास सीट से कांग्रेस के लिये चुनाव लड़ रहे कुलकर्णी को रिपब्लिकन पार्टी के ट्राय नेहल्स ने हराया। खुद भारतीय मूल के मतदाताओं ने उनके आरएसएस का उम्मीदवार होने के कारण उनको हराने के लिये अभियान चलाया।

जिस चुनाव में डेमोक्रेटिक पार्टी को अभूतपूर्व वोट मिले हों उसमें उनके एक उम्मीदवार का संघ से उसके जुड़ाव के कारण हार जाना या कहें लोगों द्वारा सचेत रूप से हरा देना जताता है कि फ़ासिस्ट विचारधारा वाले संघ से लोग़ों को कितनी नफ़रत है।

अन्तिम मिसरा

ईद पे तुम रख लो, करवा चौथ पे हमारा हो गया,
चांद को खबर तक नहीं, जमीं पे् बंटवारा हो गया।

अराजक तत्वों के वीडियो पर पुलिस कमिश्नर और जिला प्रशासन क्यों है खामोश

मज़दूर मोर्चा ब्यूरो

फरीदाबाद- बल्लभगढ़ में कॉलेज छात्रा निकिता तोमर की हत्या को साम्प्रदायिक रंग देकर देकर दंगा कराने और कानून व्यवस्था बिगाड़ने की कोशिश जनता ने तो नाकाम कर दिया है जबकि पुलिस अभी तक असली अराजक तत्वों को पकड़ ही नहीं सकी है।

इस घटना के विरोध में 1 नवम्बर को बल्लभगढ़ के दशहरा मैदान में कुछ दक्षिणपंथी संगठनों ने महापंचायत बुलाई थी। महापंचायत के बाद कुछ असामाजिक तत्वों ने पुलिस पर पथराव किया और मथुरा रोड जाम कर दिया। हालाँकि इस महापंचायत को प्रशासन रोक सकता था लेकिन आला पुलिस अफ़सरों ने अपने मातहतों को कोई दिशा निर्देश नहीं दिया। पुलिस समझ नहीं पाई, कन्फ्यूजन में रही। लेकिन जब पथराव होने लगा तो पुलिस ने उन पर डंडे बरसाये। मुट्ठी भर अराजक तत्व भाग खड़े हुए क्योंकि बल्लभगढ़ और फरीदाबाद की शांतिप्रिय जनता उनके साथ नहीं थी।

दरअसल, इस महापंचायत से एक दिन पहले कुछ दंगा फैलाने वालों ने सोशल मीडिया पर एक वीडियो वायरल किया था। उसमें मुसलमानों को सीधे सीधे चेतावनी देते हुए कहा गया था कि कुछ दिनों में हम इन मुल्ला सुअरों का ऐसा इंतज़ाम कर देंगे कि ये हमारी बहन बेटियों की तरफ देखने की हिम्मत नहीं कर पायेंगे। इसमें मुस्लिम परिवारों को वह सोसायटी ख़ाली करने की चेतावनी

दी गई थी। इसमें यह भी कहा गया कि प्रशासन इस घटना में लिप्त मुसलमानों को खत्म करे नहीं तो यह काम हम कर देंगे।

पुलिस कमिश्नर की चुप्पी

इस वायरल वीडियो को मज़दूर मोर्चा ने फरीदाबाद के पुलिस कमिश्नर ओपी सिंह को भेजते हुए जानना चाहा था कि इस वीडियो पर क्या कार्रवाई हुई? कोई जवाब न मिलने पर छह घंटे बाद मज़दूर मोर्चा ने दोबारा संदेश भेजा और बताया कि इस पर खबर छापी जा रही है। उनकी टिप्पणी चाहिए। लेकिन 4 नवम्बर को भेजे गए वायरल वीडियो पर पुलिस कमिश्नर ने खबर छापे जाने तक कोई प्रतिक्रिया नहीं दी है। इन सवालों के जवाब चाहिए कि पुलिस ने ऐसे उग्र तत्वों पर कोई कार्रवाई तक नहीं की है। प्रशासन ने उस महापंचायत को रोका क्यों नहीं?

जिस दिन महापंचायत बुलाई गई थी, मौक़े पर पुलिस ने कई वाहनों से पत्थर भी बरामद किए थे। इससे पता चलता है कि बल्लभगढ़ और फरीदाबाद में हिंसा फैलाने की कोशिश की गई थी। इस मामले में पुलिस की चुप्पी कई सवाल खड़े कर रही है। आमतौर पर प्रशासन धारा 144 लगाकर ऐसे आयोजनों को रोक देता है लेकिन उग्र संगठनों और उनके लोगों पर कोई एक्शन नहीं होता। जबकि विपक्षी दलों, मज़दूर संगठनों को अपने हक़ के लिए सामान्य प्रदर्शन तक नहीं करने दिये जाते। उन्हें देशद्रोही बताकर केस दर्ज कर दिया जाता है।

प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादक सतीश कुमार ने अपने स्वामित्व में एजीएस पब्लिकेशन्स, डी-67, सैक्टर-6, नोएडा से मुद्रित करवा कर 708 सैक्टर-14 फरीदाबाद से प्रकाशित किया। Postal Reg. No. L/H.R/FBD/463-06